समास और उसके भेद

समास की परिभाषा - Definition

समास का तात्पर्य होता है - संक्षिप्तीकरण। इसका शाब्दिक अर्थ होता है - छोटा रूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द (जिसका कोई अर्थ हो) को समास कहते हैं।

जैसे –

'रसोई के लिए घर'इसे हम 'रसोईघर'भी कह सकते हैं।

संस्कृत, जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओँ में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है।

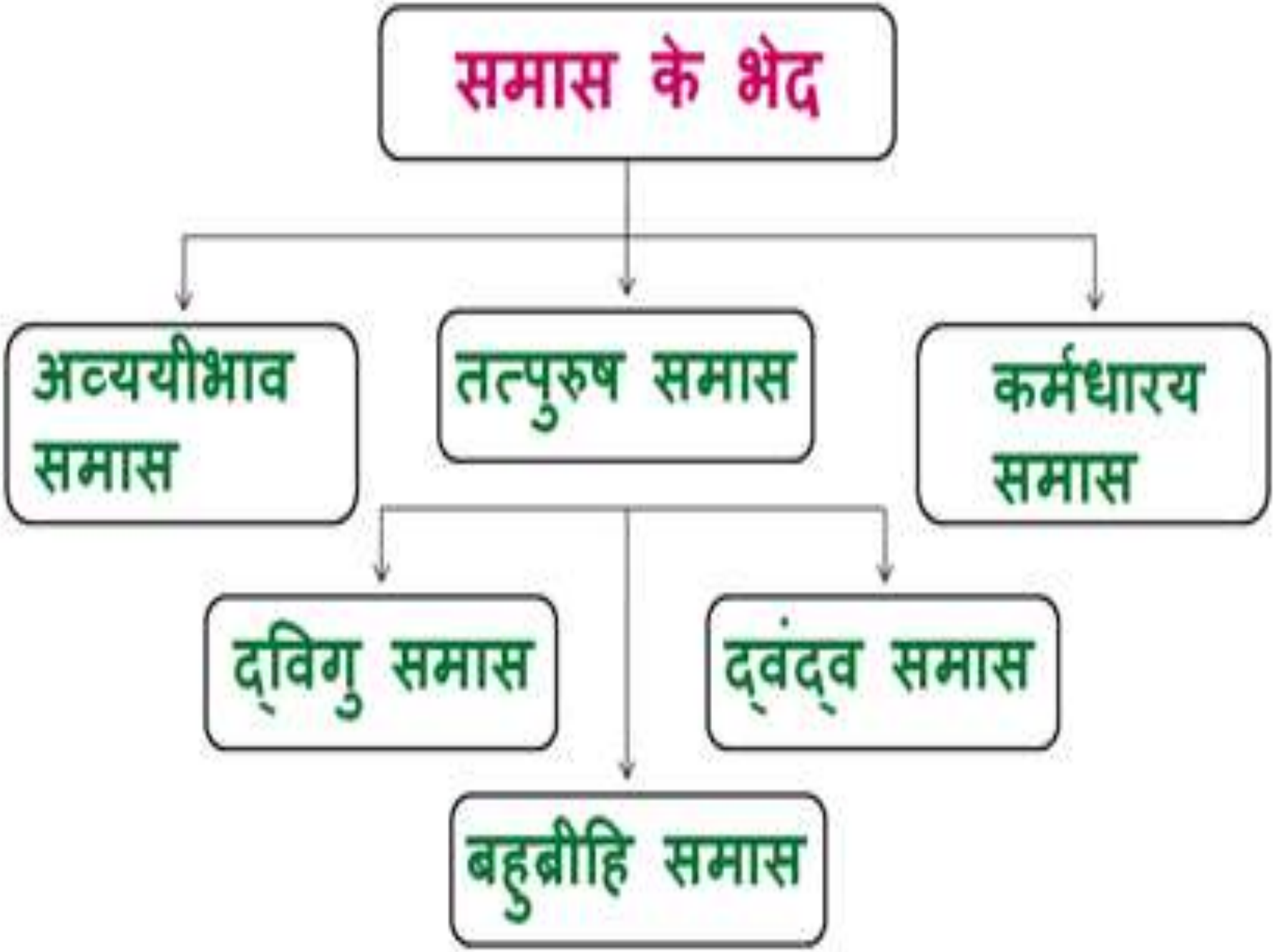
समास के भेद
अव्ययीभाव समास
तत्पुरुष समास
कर्मधारय समास
द्विगु समास
द्वंद्व समास
बहुब्रीहि समास

समास के भेद

समास के मुख्यतः छः भेद माने जाते हैं –

(6) बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

परिभाषा—जिस समास में पहला पद अव्यय हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते हैं। इसका पहला पद प्रधान होता है। इस प्रक्रिया से बना समस्तपद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है। जैसे—प्रति + दिन = प्रतिदिन। यहाँ 'प्रति' अव्यय है। 'प्रतिदिन' समस्तपद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है। अन्य उदाहरण—

समस्तपद	*विग्रह*
आजन्म	जन्म से लेकर
आजीवन	जीवन-पर्यंत/जीवन भर
आमरण	मरण तक
आसेतु	सेतु तक
आसमुद्र	समुद्र तक
गली-गली	प्रत्येक गली
गाँव-गाँव	प्रत्येक गाँव
घर-घर	प्रत्येक घर

समस्तपद	*विग्रह*
घड़ी-घड़ी	हर घड़ी
दिनोंदिन	दिन ही दिन में
निडर	डर रहित
निस्संदेह	संदेह रहित
प्रतिदिन	दिन-दिन
प्रतिमास	हरमास
प्रतिक्षण	प्रत्येक क्षण
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष/वर्ष-वर्ष

CS Scanned with CamScanner

समस्तपद	विग्रह
प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
प्रतिपल	प्रत्येक पल
बेकाम	बिना काम के
बेखटके	बिना खटके के
भरपेट	पेट भर के
यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार
यथाविधि	विधि के अनुसार
यथावसर	अवसर के अनुसार
यथारुचि	रुचि के अनुसार

समस्तपद	विग्रह
यथास्थिति	स्थिति के अनुसार
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो
यथासमय	समय के अनुसार
रातोंरात	रात ही रात में
साफ-साफ	बिलकुल साफ
हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
अनुरूप	रूप के अनुसार
रातभर	पूरी रात

CS Scanned with CamScanner

यथाविधि	विधि के अनुसार	अनुरूप	रूप के अनुसार
यथावसर	अवसर के अनुसार	रातभर	पूरी रात
यथारुचि	रुचि के अनुसार		

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है। प्रायः उत्तरपद विशेष्य और पूर्वपद विशेषण होता है। *उदाहरणतया*–'रसोई के लिए घर'। यहाँ 'घर' विशेष्य है और 'रसोई के लिए' विशेषण है।

समास-प्रक्रिया में बीच की विभक्तियों का लोप तो होता ही है, कभी-कभी बीच में आने वाले अनेक पदों का भी लोप हो जाता है। *जैसे*–'दहीबड़ा' का विग्रह है–'दही में डूबा हुआ बड़ा'। समास होने पर 'में डूबा हुआ' तीनों पद लुप्त हो गए हैं।

तत्पुरुष के भेद–तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं–

(*i*) कर्म तत्पुरुष–जहाँ पूर्वपद में *कर्मकारक की विभक्ति* का लोप हो, वहाँ 'कर्म तत्पुरुष' होता है। *उदाहरणतया*–

समस्तपद	*विग्रह*	*समस्तपद*	*विग्रह*
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ	मरणासन्न	मरण को पहुँचा हुआ
गृहागत	गृह को आया हुआ	यशप्राप्त	यश को प्राप्त
परलोकगमन	परलोक को गमन	स्वर्गगत	स्वर्ग को गया हुआ

(*ii*) करण तत्पुरुष–जहाँ पूर्व पक्ष में *करण कारक की विभक्ति* का लोप हो, वहाँ 'करण तत्पुरुष' होता है। *उदाहरणतया*–

समस्तपद	*विग्रह*	*समस्तपद*	*विग्रह*
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	मदमस्त	मद से मस्त
अनुभवजन्य	अनुभव से जन्य	मदांध	मद से अंधा
ईश्वरप्रदत्त	ईश्वर द्वारा प्रदत्त	मनगढ़ंत	मन से गढ़ा हुआ
कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य	मनमाना	मन से माना
गुणयुक्त	गुण से युक्त	रेखांकित	रेखा से अंकित
गुरुदत्त	गुरु द्वारा दत्त	रोगमुक्त	रोग से मुक्त
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	वाग्दत्ता	वाणी द्वारा दत्त
दयार्द्र	दया से आर्द्र	शोकाकुल	शोक से आकुल
प्रेमातुर	प्रेम से आतुर	स्वरचित	स्व द्वारा रचित
भयाकुल	भय से आकुल	सूररचित	सूर द्वारा रचित
भुखमरा	भूख से मरा	हस्तलिखित	हस्त से लिखित

(*iii*) संप्रदान तत्पुरुष–जहाँ समास के पूर्व पक्ष में *संप्रदान की विभक्ति* अर्थात् *'के लिए'* का लोप होता है, वहाँ संप्रदान तत्पुरुष समास होता है। *जैसे*–

CS Scanned with CamScanner

समस्तपद	विग्रह
पराधीन	पर के अधीन
पूँजीपति	पूँजी का पति
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय
प्रजापति	प्रजा का पति
प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार
शिवालय	शिव का आलय

समस्तपद	विग्रह
लोकसभा	लोक की सभा
विद्याभंडार	विद्या का भंडार
सचिवालय	सचिव का आलय
सेनानायक	सेना का नायक
स्वास्थ्यरक्षा	स्वास्थ्य की रक्षा
ग्रामपंचायत	ग्राम की पंचायत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष—जहाँ *अधिकरण कारक की विभक्ति* अर्थात् *'में', 'पर'* का लोप होता है, वहाँ 'अधिकरण तत्पुरुष' समास होता है। जैसे—

समस्तपद	विग्रह
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
आनंदमग्न	आनंद में मग्न
आपबीती	आप पर बीती
कलानिपुण	कला में निपुण
कानाफूसी	कानों में फुसफुसाहट
कार्यकुशल	कार्य में कुशल
कुलश्रेष्ठ	कुल में श्रेष्ठ
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवास	ग्राम में वास
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
जगबीती	जग पर बीती
डिब्बाबंद	डिब्बे में बंद
दानवीर	दान में वीर

समस्तपद	विग्रह
देशाटन	देश में अटन
धर्मवीर	धर्म में वीर
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
नीतिनिपुण	नीति में निपुण
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम
युद्धवीर	युद्ध में वीर
रणकौशल	रण में कौशल
लोकप्रिय	लोक में प्रिय
विद्याप्रवीण	विद्या में प्रवीण
विचारमग्न	विचार में मग्न
व्यवहारकुशल	व्यवहार में कुशल
शरणागत	शरण में आगत
सिरदर्द	सिर में दर्द

(vii) नञ् तत्पुरुष—जिस समस्तपद में पहला पद *नकारात्मक* (अभावात्मक) हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं।

समस्तपद	विग्रह
अकर्मण्य	न कर्मण्य
अजर	न जर
अधीर	न धीर
अधर्म	न धर्म
अनचाही	न चाही
अनदेखी	न देखी
अनंत	न अंत
अनर्थ	न अर्थ
अनश्वर	न नश्वर
अनहोनी	न होनी
अनाथ	न नाथ
अनादर	न आदर

समस्तपद	विग्रह
अनादि	न आदि
अनिच्छा	न इच्छा
अन्याय	न न्याय
अपुत्र	न पुत्र
अब्राह्मण	न ब्राह्मण
अमर	न मर
अयोग्य	न योग्य
असंभव	न संभव
असत्य	न सत्य
अस्थिर	न स्थिर
अज्ञान	न ज्ञान
नास्तिक	न आस्तिक

3. कर्मधारय समास

कर्मधारय समास में पहला पद *विशेषण* तथा दूसरा पद *विशेष्य* होता है; अथवा एक पद *उपमान* और दूसरा पद *उपमेय* होता है। *जैसे–*

(क) विशेषण-विशेष्य कर्मधारय

समस्तपद	*विग्रह*
अंधकूप	अंधा है जो कूप
अधपका	आधा पका
अश्रुगैस	अश्रु को लाने वाली गैस
कापुरुष	कायर है जो पुरुष
कुबुद्धि	बुरी है जो बुद्धि
कृष्णसर्प	कृष्ण है जो सर्प
गोबरगणेश	गोबर से बना गणेश
घृतान्न	घृत से युक्त अन्न
दहीबड़ा	दही में डूबा हुआ बड़ा
दुरात्मा	बुरी है जो आत्मा
दुश्चरित्र	बुरा है जो चरित्र
नीलकमल	नीला है जो कमल
नीलांबर	नीला है जो अंबर
नीलकंठ	नीला है जो कंठ
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलगाय	नीली है जो गाय
पनचक्की	पानी से चलने वाली चक्की
परमानंद	परम है जो आनंद
पीतांबर	पीत है जो अंबर

समस्तपद	*विग्रह*
पर्णकुटी	पर्ण से बनी कुटी
प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
बैलगाड़ी	बैलों से खींची जाने वाली गा
मधुमक्खी	मधु का संचय करने वाली मक्ख
महाजन	महान है जो जन
महात्मा	महान है जो आत्मा
महादेव	महान है जो देव
महापुरुष	महान है जो पुरुष
महाराजा	महान है जो राजा
महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
मालगाड़ी	माल को ढोने वाली गाड़ी
महासागर	महान सागर
रेलगाड़ी	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
लालटोपी	लाल है जो टोपी
वनमानुष	वन में रहने वाला मनुष्य
श्वेतांबर	श्वेत है जो अंबर
सद्धर्म	सत् है जो धर्म

(ख) उपमेयोपमान कर्मधारय समास–

समस्तपद	*विग्रह*
कनकलता	कनक के समान लता
कमलनयन	कमल के समान नयन
करकमल	कमल के समान कर
कुसुमकोमल	कुसुम-सा कोमल
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
घनश्याम	घन के समान श्याम
चरणकमल	कमल के समान चरण
देहलता	देह रूपी लता

समस्तपद	*विग्रह*
नरसिंह	सिंह रूपी नर
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मुखचंद्र	चंद्र के समान मुख
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
वचनामृत	वचन रूपी अमृत
विद्याधन	विद्या रूपी धन
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न।

Scanned with CamScanner

4. द्विगु समास

जहाँ समस्तपद के पूर्वपक्ष में संख्यावाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है। *उदाहरणतया—*

समस्तपद	*विग्रह*
अष्टाध्यायी	अष्ट अध्यायों का समाहार
अष्टसिद्धि	आठ सिद्धियों का समाहार
चव्वनी	चार आनों का समाहार
चौमासा	चार मासों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
चौपाई	चार पंक्तियों का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
त्रिकोण	तीन कोणों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समाहार
त्रिभुवन	तीन भुवनों का समाहार
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
दुराहा	दो राहों का समाहार
दोपहर	दो पहरों का समाहार

समस्तपद	*विग्रह*
द्विगु	दो गौओं का समाहार
नवग्रह	नव ग्रहों का समाहार
नवनिधि	नव निधियों का समाहार
नवरत्न	नव रत्नों का समाहार
पंचतंत्र	पंच तंत्रों का समाहार
पंचवटी	पंच वटों का समाहार
पंजाब	पाँच आबों का समाहार
पंचतत्त्व	पाँच तत्त्व
शताब्दी	शत अब्दों का समाहार
षड्रस	छः रसों का समाहार
सतसई	सात सौ का समाहार
सप्ताह	सात दिनों का समाहार
सप्तद्वीप	सात द्वीपों का समाहार
सप्तऋषि	सात ऋषि

5. द्वंद्व समास

परिभाषा—जिस समस्तपद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वंद्व समास होता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। *जैसे*—'भाई और बहन' का समस्तपद होगा—'भाई-बहन'। यहाँ दोनों पद समान हैं। समास करते समय मध्य-स्थित 'और' का लोप हो गया है। अन्य उदाहरण देखिए—

समस्तपद	*विग्रह*
अन्न-जल	अन्न और जल
अपना-पराया	अपना और पराया
अमीर-गरीब	अमीर और गरीब
आटा-दाल	आटा और दाल
आशा-निराशा	आशा और निराशा
उलटा-सीधा	उलटा और सीधा
ऊँच-नीच	ऊँच और नीच
खट्टा-मीठा	खट्टा और मीठा
गंगा-यमुना	गंगा और यमुना
गुणदोष	गुण और दोष
घी-शक्कर	घी और शक्कर
छोटा-बड़ा	छोटा और बड़ा
जन्म-मरण	जन्म और मरण
जय-पराजय	जय और पराजय
जल-वायु	जल और वायु
तन-मन	तन और मन

समस्तपद	*विग्रह*
धूपदीप	धूप और दीप
नर-नारी	नर और नारी
नाना-नानी	नाना और नानी
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
भला-बुरा	भला और बुरा
भीमार्जुन	भीम और अर्जुन
भूख-प्यास	भूख और प्यास
माँ-बाप	माँ और बाप
माता-पिता	माता और पिता
यश-अपयश	यश और अपयश
राजा-रंक	राजा और रंक
रात-दिन	रात और दिन
राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
रुपया-पैसा	रुपया और पैसा
लव-कुश	लव और कुश
लाभालाभ	लाभ और अलाभ

Scanned with CamScanner

दाल-रोटी	दाल और रोटी
दाल-भात	दाल और भात
दूध-दही	दूध और दही
देवासुर	देव और असुर
देश-विदेश	देश और विदेश
धनी-मानी	धनी और मानी
वेद-पुराण	वेद और पुराण
लोटा-डोरी	लोटा और डोरी
सुख-दुख	सुख और दुख
स्त्री-पुरुष	स्त्री और पुरुष
हाथ-पैर	हाथ और पैर
हाथ-मुँह	हाथ और मुँह
हानि-लाभ	हानि और लाभ
जल-थल	जल और थल

6. बहुव्रीहि समास

जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। जैसे— 'एकदंत' अर्थात् एक दाँत वाला है जो—गणेश। यहाँ 'एक' और 'दंत' में से कोई पद प्रधान या गौण नहीं है; बल्कि ये दोनों पद मिलकर तीसरे पद गणेशजी के लिए प्रयुक्त हो रहे हैं। अतः बहुव्रीहि समास में पहला या दूसरा—कोई भी पद प्रधान नहीं होता।

समस्तपद	*विग्रह*
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी
उदारहृदय	उदार है हृदय जिसका
कनफटा	कान है फटा जिसका (फकीर)
गजानन	गज जैसे आनन वाला (गणेश)
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला (कृष्ण)
चक्रधर	चक्र धारण करने वाला (कृष्ण)
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके (कृष्ण)
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु)
चतुर्मुख/चतुरानन	चार हैं मुख/आनन जिसके (ब्रह्मा)
चंद्रमुखी	चंद्र के समान मुख वाली
जितेंद्रिय	जीत लिया है इंद्रियों को जिसने
तपोधन	तप ही है धन जिसका
तीव्रबुद्धि	तीव्र बुद्धि वाला
त्रिलोचन	तीन आँखों वाला (शिव)
त्रिवेणी	तीन नदियों का संगम-स्थल (प्रयागराज)
दशानन/दशमुख	दस आनन/मुख हैं जिसके (रावण)
दीर्घ-बाहु	लंबी भुजाओं वाला (विष्णु)
दुधमुँहा	मुँह में दूध है जिसके (छोटा बालक)
नकटा	नाक कटा है जिसका
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
निर्दय	नहीं है दया जिसमें
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका (शिव)
पतझड़	झड़ जाते हैं पत्ते जिस ऋतु में
पतिव्रता	पति ही है व्रत जिसका
पीतांबर	पीले वस्त्रों वाला (कृष्ण)
पंचानन	पाँच आननों वाला (शिव)
बारहसिंगा	बारह सींगों वाला
महात्मा	महान आत्मा है जिसकी
महावीर	महान वीर है जो (हनुमान)
मुरलीधर	मुरली धारण करने वाला (कृष्ण)
मृगनयनी	मृग जैसे नयनों वाली
लंबोदर	लंबे उदर वाला (गणेश)
सुमुखी	सुंदर मुख वाली
अंशुमाली	किरणों का स्वामी अर्थात सूर्य
दशकंठ	दस कंठ हैं जिसके (रावण)
मेघनाद	मेघ के समान नाद वाला (रावण का भाई)
कैलाशपति	कैलाश पर्वत का स्वामी अर्थात शिव
घनश्याम	बादल के समान श्याम वर्ण वाला (कृष्ण)
महादेव	महान है जो देवता अर्थात हनुमान/शिव
कमलनयन	कमल के समान नयनों वाला (राम)

बहुव्रीहि और कर्मधारय में अंतर

कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान (विशेष्य) होता है तथा पहला पद उस विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है। *उदाहरणतया*—महावीर = महान है जो वीर। यहाँ 'वीर' (विशेष्य) का विशेषण है 'महान'। बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। *जैसे*—'महान वीर है जो' अर्थात् हनुमान। कुछ अन्य उदाहरण देखिए—

1. *कमलनयन* — कमल जैसे नयन (कर्मधारय)
   कमल जैसे नयनों वाला अर्थात् कृष्ण (बहुव्रीहि)

CS Scanned with CamScanner

- धन्यवाद